

परमात्म संदेश योजना

संस्थान की प्लेटिनम जुबली देश-विदेश में धूमधाम से मनाई गई, इसकी सबको मुबारक हो।

परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर निराकार सो साकार द्वारा पुनः आत्म-स्वमान द्वारा स्वर्णिम दुनिया बना रहे हैं। दूसरी ओर जहां चारों ओर दुःख, अशांति व समस्याओं से घिरा मानव जिसे जीवन में एक पल की भी शांति नसीब नहीं है। ऐसे में जिन्होंने परमात्मा की छत्रछाया के आंचल के मध्य अपनी शक्तियों को जाना और पहचाना है। और परमात्मा के साथ का अनुभव संजोये ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं। अब बाबा की आशा है कि आप सभी पूर्वज आत्माएं लोगों को दुःखों से मुक्त करो। और उन्हें यह संदेश दो कि जिसे आप याद कर रहे हैं वह स्वयं इस धरा पर आकर 'स्वर्णिम दुनिया' की स्थापना का दिव्य कर्तव्य कर रहे हैं।

ऐसे में आप सभी "ओम शान्ति मीडिया" से जुड़े हर पाठक व ब्राह्मण आत्मा जो लाभ रहे हैं और अपने जीवन में खुशी, शक्ति तथा व्यवहार में सहजता का अनुभव कर रहे हैं। आप सभी इस लाभ को अपने पड़ोसी, दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठन, मित्र-सम्बन्धी, लौकिक

परिवार को ईश्वरीय कर्तव्य का बोध कराना हमारा नीजी कर्तव्य बन जाता है। तो प्रिय पाठकों आपसे इस सेवा-कार्य को अपना उत्तरदायित्व समझ कम से कम पांच व्यक्तियों को सदस्य अवश्य बनाएं और ईश्वरीय संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं। ऐसी हमारी शुभ भावना व कामना है। यह बाबा ने कहा है कि आपके पड़ोसी तथा जहां भी आप रहते हैं शहर, गांव, कस्बे में परमात्मा का संदेश देकर आप इस ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनाएं। इसमें आप सिर्फ पाठक ही नहीं वरन् ईश्वरीय सेवा करने के निमित्त बन हर आत्मा को दिव्य ईश्वरीय कार्य के व्यापक समाचार तथा विचारों को प्रसारित करने में सहभागी बनें। और सम्बन्ध-सम्पर्क तथा खास आज तक जितने भी वी.आई.पी., आई.पी., मधुबन कॉन्फ्रेंस में तथा राजयोग शिविर में जो भाग लिए हैं, उन्हें बाबा के कार्य और सेवाओं की जानकारी सदा मिलती रहे।

आप सभी पाठकों का सुझाव व आपके ईश्वरीय जीवन के सुंदर अनुभव आमंत्रित हैं।

सहयोग के लिए धन्यवाद!

ईश्वरीय सेवा में
संपादक

कोई वर्तमान असहनीय घटना के कारण होता है। ज्ञान-बल से अपनी चिन्ताओं का निवारण करो व किसी ज्ञानी आत्मा से प्रतिदिन बीस मिनट ज्ञान की चर्चा करो।

प्रश्न -मेरी पत्नी को कई वर्ष से अवसाद का रोग है, परन्तु उसकी इच्छाएँ अति में हैं, वह इच्छाओं का त्याग नहीं कर सकती। उसे पांच करोड़ चाहिए बस चाहिए, हमें उसे देने ही हैं। अब हम भी उसे अनसुना करने लगे हैं। उसका डिप्रेशन बढ़ता ही जा रहा है। क्या इससे निकलने का कोई तरीका है?

उत्तर -हाँ तरीका है -इच्छाओं का त्याग। जो मनुष्य इच्छाओं का गुलाम है वह कभी अच्छा नहीं हो सकता। इच्छाएँ तो अनन्त हैं व अतृप्ति का कारण हैं। उसे आप ईश्वरीय ज्ञान दिलाएँ हो सकता है उसका भाग्य जग जाए अन्यथा उसे जीवित मुर्दा ही छोड़ दें। डिप्रेशन का एक 17 वर्ष का भयानक केस इक्कीस दिन में ठीक हो गया। जरूरत इस बात की है कि वह व्यक्ति सहयोग करे व अपने अंदर बीमारी से मुक्त हो नो वाना आत्मविश्वास पैदा करें।



मन
की
छातें
- ब.कु.सूर्य

प्रश्न -मैं ज्ञान में चल रही हूँ परिवार तथा व्यवहारिक हालात अच्छी न होने के कारण समस्याएँ हावी हो जाती है ऐसे में मैं क्या करूँ ?

उत्तर -संसार में ये समस्याएँ घर-घर में बढ़ती जा रही हैं और ऐसा आभास हो रहा है कि कुछ ही वर्ष में ये दुनिया मेन्टल हॉस्पिटल का नजारा दिखाई देने लगेगा। इसका कारण है बढ़ता पापकर्म, अहंकार व क्रोध। और मनुष्य के अंदर धधकती हुई काम-वासना। आपके जो बच्चे हैं, आपको तो यही सत्य ज्ञात है कि ये मेरे बच्चे हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि वे 63 जन्मों का पाप-पुण्य भी अपने साथ लाये हैं। उन पर कलियुग का भयानक प्रभाव भी है। यदि आपने भी अपनी स्थिति बिगाड़ ली तो परिस्थितियाँ और ही बिगड़ जाएंगी। ये तो ऐसे ही होगा जैसे बीमार को देखकर डॉक्टर भी बीमार हो जाए। इसलिए स्वयं को सम्भालो। यदि आप चिन्ता व परेशानियों की अग्नि में जलती रही तो वे भी जलकर भष्म हो जाएंगे। वे जलेंगे काम की अग्नि में व समस्याओं की अग्नि में।

याद कर लो - स्व-स्थिति श्रेष्ठ तो परिस्थितियाँ कुछ भी नहीं तथा स्व-स्थिति श्रेष्ठ होगी स्वमान से। पहले स्वयं को हल्का करो...कौन मुझे साथ दे रहा है, बार-बार याद करो..मन के बोझ बच्चों के भाग्य पर व बाबा पर छोड़ दें। फिर दोनों समय भोजन बनाते हुए एक सौ आठ बार याद करो "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ"।

प्रश्न -मुझे बहुत साल से डिप्रेशन है। मैं इसके ही लिए राजयोग सीखने गया, परन्तु जब मैं योग करता हूँ तो सिर में खिंचाव होने लगता है, मैं योग नहीं कर सकता। परन्तु मैं इस बीमारी से मुक्त होना चाहता हूँ, कोई सरल विधि बताइये ?

उत्तर -डिप्रेशन की हालत में ब्रेन स्वस्थ ही नहीं रहता, इसलिए कमजोर मस्तिष्क के द्वारा एकाग्रता सम्भव नहीं है। योग-अभ्यास में सफलता के लिए ब्रेन का स्वस्थ होना आवश्यक है। आपको यह भी ज्ञात रहे कि डिप्रेशन की कोई कारगर दवाई भी नहीं होती। क्योंकि डिप्रेशन होता है मन में और दवाई दी जाती है ब्रेन की। इससे थोड़ा सा फायदा होगा। सम्पूर्ण लाभ के लिए मन को प्रसन्न करना आवश्यक है। इसके लिए राजयोग का नहीं, ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करो।

आपको दो काम करने हैं। प्रातः खाली पेट दस मिनट अनुलोम-विलोम प्राणायाम। धीरे-धीरे शांत व प्रसन्न मन के साथ। दूसरा रात्रि को १०८ बार शांति में बैठकर फीलिंग सहित लिखना है "मैं महान आत्मा हूँ"। टीवी देखना पूरी तरह बंद कर दो। प्रतिदिन ज्ञान-मुरली की क्लास दो बार अवश्य करना। डिप्रेशन पूर्व जन्मों के विकर्मों के कारण या

ब्रह्माकुमारी संस्था...

पृष्ठ 12 का शेष क्योंकि आज के युग में एक छोटे से चमत्कार से लाखों लोगों की भीड़ लग जाती है तो श्रीकृष्ण के आने पर तो पूरी दुनिया ही उमड़ पड़ेगी। तब वो अपना कार्य कैसे कर पायेंगे।

ब्रह्मविद्यापीठ त्रिनिडाड के संस्थापक स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि श्रीकृष्ण ने महाभारत में अपनी भूमिका निभायी थी। परन्तु उन्होंने भी उस अव्यक्त सत्ता को ही महत्व दिया था। इसके साथ ही अर्जुन को निर्देशित किया था कि निराकार सत्ता के निर्देशन में महाभारत का युद्ध हुआ था। आज का मंच इस सत्य को पूरे विश्व में परिभाषित करेगा तथा इसका परिणाम आने वाले समय में दिखेगा।

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने

कहा कि गीता का भगवान शिव है जिसका कोई शारीरिक आकार नहीं है।

निष्कर्ष के रूप में यह बात सामने आयी कि यदि भगवान सर्वव्यापी है तो फिर उसे अवतरण या परकाया प्रवेश करने की आवश्यकता क्यों है के साथ गीता का स्वामित्व साकार से निराकार की ओर बढ़ चला।

गीता में डाक्टरेट करने वाले विद्वान ब्र.कु.वासवराज, प्यूरिटी के संपादक ब्र.कु.बृजमोहन तथा लंदन से आयी ब्र.कु.जयंती ने भी गीता के ऊपर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए और यह प्रमाणित कर दिखाया कि गीता का ज्ञान श्रीकृष्ण के द्वारा नहीं बल्कि निराकार परमात्मा शिव के द्वारा दिया गया था। की ओर बढ़ चला।

गीता में डाक्टरेट करने वाले विद्वान

इससे आपका मन भी शान्त होगा व भोजन भी पवित्र हो जाएगा।

दस-दस मिनट तीन बार अपने घर में बैठकर कामेन्ट्री से योग करो। तीन मास तक ये दोनों काम करो। साथ में एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन प्रतिदिन करो। याद रहे -समस्याएँ आने पर अमृतवेला उठना व मुरली सुनना छोड़ देना, सबसे बड़ी गलती है। प्रश्न -बाबा का आना भी कम हो रहा है। हम ये जानना चाहते हैं कि घर में ही प्रभु-मिलन कैसे करें व उनकी मदद कैसे लें ? उनकी मदद के पात्र कौन से बच्चे हैं ? उत्तर -निःसंदेह बाबा का अवतरण शनैः शनैः कम होता जाएगा और बाबा भी तो सतयुग की स्थापना के कार्य को पूर्ण करना चाहते हैं। वे हमें सम्पूर्ण भी बनाना चाहते हैं ताकि हमारी सम्पूर्णता का प्रकाश विश्व से अज्ञान-अंधकार को मिटा सके।

उन्होंने हमारी 44 वर्ष अव्यक्त पालना की। सम्पूर्ण ज्ञान, शक्ति व वरदानों से हमें सम्पन्न किया। अब वे इस पालना का प्रेक्टिकल स्वरूप भी देखना चाहते हैं। उन्हें पढ़ाई की परीक्षा भी तो लेनी है। वे यही चाहते हैं कि मेरे महान वत्स निरंतर मुझसे मिलन मनाएं, निरंतर मेरे सम्पर्क में रहें। उन्होंने कहा -इतने वर्ष मैं तुम्हारे पास आया, अब तुम ऊपर मेरे पास आओ।

निरंतर इस प्रभु मिलन हेतु, व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति, सम्पूर्ण पवित्र व निष्पाप होना आवश्यक है। बिना सर्वस्व त्याग के ये भाग्य नहीं मिलता। जो आत्मा सारा दिन किसी न किसी तरह के योगाभ्यास में तत्पर है, वही अमृतवेले परमात्म-मिलन का सुख पा सकते हैं। सारा समय स्वमान की साधना, अशरीरीपन की साधना व आत्मिक भाव व शुभ-भाव की साधना चलती रहे। ऐसा करने से हम जब चाहे प्रभु मिलन का सुख ले सकते हैं।

विनाशकाल में व आज भी सदा ही हमें परमात्म-सहयोग की आवश्यकता है। विघ्नों में हमारे पुण्य ही हमारा साथ निभाते हैं। हमारी पवित्रता हमारी छत्रछाया बन जाती है, ईश्वरीय कार्यों में दिया गया सहयोग हमें ईश्वरीय सहयोग का पात्र बना देता है। बाबा ने छः मास पूर्व हमें व्यर्थ से मुक्त होने को कहा था। जिसने इस पर पूरा ध्यान दिया, उन पर भगवान भी ध्यान देता है। जो भगवान की ही नहीं सुनते, भला वह उनकी क्यों सुनेगा। जो बाबा का बनकर भी विषय वासनाओं में रत हैं, वे प्रभु कृपा का पात्र नहीं बन सकते। जो दूसरों को कष्ट दे रहे हैं, दूसरों की स्थिति बिगाड़ रहे हैं, जो स्वार्थवश दूसरों का घात कर रहे हैं उनसे प्रभु दृष्टि हट जाती है। यदि बाबा की मदद के पात्र बनना है तो पुण्यात्मा बनें, सुखदाई बनें व सच्चे मन से व निष्काम भाव से यज्ञ सेवा करें। जो योगी हैं वे उतने ही ज्यादा बाबा के सहयोगी हैं, वे ही परमात्म मदद के पात्र हैं।

ब्र.कु.वासवराज, प्यूरिटी के संपादक ब्र.कु.बृजमोहन तथा लंदन से आयी ब्र.कु.जयंती ने भी गीता के ऊपर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए और यह प्रमाणित कर दिखाया कि गीता का ज्ञान श्रीकृष्ण के द्वारा नहीं बल्कि निराकार परमात्मा शिव के द्वारा दिया गया था।

तनावरहित खुशहाल... पृष्ठ 6 का शेष बजाए सीढ़ियों का प्रयोग करें।

गुस्सा कम करें - हृदय के मरीजों के लिए गुस्सा करना जानलेवा सिद्ध हो सकता है। तनाव दूर करने का हर संभव प्रयास करें। इसके लिए आप मेडिटेशन और योग का सहारा भी ले सकते हैं। गुस्सा करने से ब्लड प्रेशर और तनाव बढ़ता है। विशेषज्ञों का मानना है कि हार्ट अटैक के 90 प्रतिशत केस तनाव के कारण ही होते हैं। - क्रमशः



सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ भगवान कौन ? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक उपलब्ध, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

आगे निकलने की....

पृष्ठ 12 का शेष चांसलर डॉ.एच.महेशप्पा, कजाकिस्तान की परिवार स्वास्थ्य केंद्र अस्ताना की निदेशिका रोजा अब्जोलोवा, नाईदर लैण्ड के प्रतिष्ठित व्यवसायी प्रकाश मेंघानी, बिहार के सांसद अर्जुन राय, तमिलनाडू के रामलिंगा मिल्स ग्रुप के चेयरमैन डॉ.टी.आर.धीनाकरन, उत्तर प्रदेश के ट्रांसपोर्ट मंत्री मानपाल सिंह, बिहार के शहरी विकास मंत्री प्रेम कुमार, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.देवकी, ब्र.कु.शुक्ला ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।